व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका

हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

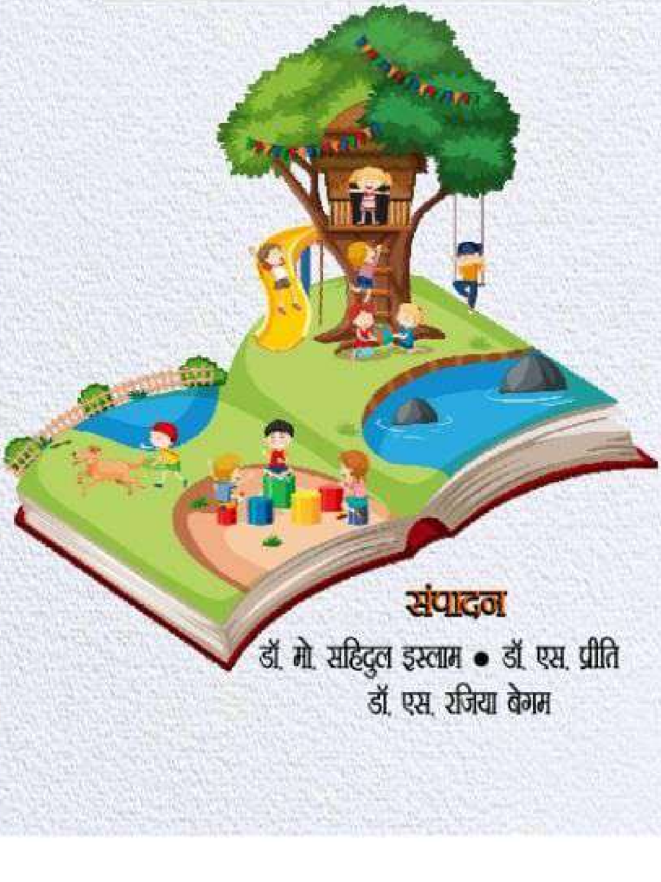

संपादन

डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम • डॉ. एस. प्रीति

डॉ. एस. रजिया बेगम

व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका
हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम, डॉ. एस. प्रीति
डॉ. एस. रजिया बेगम

ISBN 978-93-92703-94-2

₹ 500

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका
हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम, डॉ. एस. प्रीति
डॉ. एस. रजिया बेगम

सृजनलोक प्रकाशन, नई दिल्ली

ISBN : 978-93-92703-

प्रथम संस्करण : 2025

प्रकाशक :

सृजनलोक प्रकाशन

B – 1, दुग्गल कॉलोनी, खानपुर, नई दिल्ली –110062

मोबाइल : 7654926060

ईमेल : srijanlok@gmail.com

आवरण सज्जा : संतोष श्रेयांस

मुद्रक : रियल इम्पैक्ट, चेन्नई

Vyaktitva Evam Samaj Nirman me Baal Sahitya ki Bhumik : Hindi Evam Bharatiya Bhashaon ke sandrabh me.

Editted By : Dr. Md. Shwahidul Islam, Dr. S Preeti
Dr. S Razia Begum

Published by : Srijanlok Prakashan,
B - 1, Duggal Colony, Khanpur, New Delhi – 110062

अनुक्रमणिका

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	बाल साहित्य के विकास में कनउजी लोक साहित्य का प्रदेय	5
डॉ. नरेश कुमार	हिमाचल का बाल साहित्य (21वीं सदी की हिन्दी कविता के विशेष सन्दर्भ में)	17
डॉ. एस. प्रीति	प्रिशियस बेबी एक मनोविश्लेषणात्मक चित्रण	24
डॉ. एस रजिया बेगम	व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला हैं बाल कथाएं	28
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	आधुनिक तमिल बाल साहित्य के पितामह अष. वल्लियप्पा	33
डॉ० रेखा शर्मा	बाल साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ताः भविष्य की चुनौतियाँ और संभावनाएं	39
डॉ. अनिता सिंह	कैसा हो डिजिटल युग का बाल साहित्य?	44
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	बाल साहित्य के विविध आयाम	52
डॉ. एस. विजया	बालकों के विकास में बाल साहित्य का योगदान	60
डॉ. आर. कविता	समाज और राष्ट्रीय निर्माण में बालसाहित्य का योगदान	67
रानी परिहार	दिव्या माथुर कृत बाल उपन्यास "बिन्नी का बिल्ला" में समाहित बाल चेतना	72
डॉ. मो. मजीद मियां	हिन्दी साहित्य में बाल कविता	77
जय कुमार	दीनदयाल शर्मा की कविताओं में बालमन का विश्लेषण	84
डॉ. ए रमणी	चरित्र और व्यक्तित्व में बाल साहित्य का योगदान	89

डॉ. सावित्री देवी	क्षमा शर्मा के कथा साहित्य में बाल विमर्श	92
डॉ. एस. प्रीति लता	हिन्दी कहानियों में बाल मनोविज्ञान और नैतिकता	98
डॉ. सुमित्रा देवी	नई शिक्षा नीति और बाल साहित्य	101
डॉ. सपना पेळपकर	समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अमृतलाल के बाल साहित्य का योगदान	107
डॉ. श्रीविद्या पीवी	कृत्रिम बुद्धि और तकनीक के वर्तमान समय में बाल साहित्य की चुनौतियां	117
डॉ. डी. जयभारती	बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति और भविष्य	121
कंचना कुमारी	व्यक्तित्व निर्माण के विविध आयाम (दिविक रमेश के बाल साहित्य के विशेष संदर्भ में)	126
विजेता पाल	बाल साहित्य में विज्ञान का महत्व	133
वेंकट शिल्पा. काकि	बाल साहित्य में परी की कहानियों की आवश्यकता और महत्व	137
डॉ. हेमलता प्रेमजीभाई लोंचा	बालको के सर्वांगीण विकास में बाल साहित्य का योगदान	143
एम. संजीवी कनी	कृत्रिम बुद्धि और तकनीक के वर्तमान समय में बाल साहित्य की चुनौतियां	152
मरगथवल्ली.बी	व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका	159
इ. जाक्कुलिन	बालसाहित्य एक अनुशीलन : मालती जोशी की कहानियों के संदर्भ में	164
आर. आर. सौम्याश्री	व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका	170
भुवनेश्वरी. एस	दिनेश चमोला 'शैलेश' की बाल कहानियों में जीवन मूल्य	173
डॉ. जी. अय्याराजु	हिंदी बाल साहित्य की भूमिका	178
पूजा रानी	उषा यादव के बाल साहित्य में जीवन मूल्य और संस्कृति	184

बाल साहित्य में परी की कहानियों की आवश्यकता और महत्व

वेंकट शिल्पा. काकि (शोधार्थी)
डॉ.पूर्णिमा श्रीनिवासन (शोधनिर्देशिका)
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (VISTAS)
पल्लावरम, चेन्नई, दूरवाणी : 7299023006

भूमिका :

बच्चे भगवान का अनुपम वरदान है। जो जीवन की खट्टी-मीठी संगीत-सुरभि के साथ संस्कृति, संप्रदाय और परंपरा सुरक्षित रखते हैं। समय के साथ जीवन को सुखमय बनाने अपने आप को हम परिवर्तित करते आए हें लेकिन बच्चा और उनकी प्रवृत्ति में कोई बदलाव नहीं है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के बाते इसे स्पष्ट करती है कि - "ठीक से देखने पर बच्चे जैसे पुराना और कुछ नहीं है। देश, काल, शिक्षा, प्रथा के अनुसार वयस्क मनुष्यों में कितनी नए परिवर्तन हुए हैं, लेकिन बच्चा हजारों साल पहले जैसा था, आज भी वैसा ही है।" बच्चों के चेहरे पर एक सुंदर मुस्कान आता है, जब वे उड़ते हुए तितलियों को देखते हैं, बारिश में पानी से खेलते हैं, गाड़ी पर चक्कर लगते है, छोटे-छोटे मुरगे की बच्चियों को देखते हैं। दिन-ब-दिन बड़ते बच्चों के रुचि में परिवार और परिवेश को देख कर परिवर्त शुरू होता है। उनके मन में कई प्रश्न उठते है और जिज्ञासा शुरू होता है। जिसकी तृप्त करने में बाल साहित्य के समान और कोई साधन नहीं हैं। वैश्वीकरण और यंत्रीकरण के विकास से बच्चे विभिन्न परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। उन्हे सगुण सम्पन्न, स्वास्थ्य, बुद्धिमान, संवेदनशील, आदि बनाना परिवार के साथ साहित्य का कर्तव्य है। इस का मूल कारण भावी देश का स्वरुपू निर्णायक आज के बच्चे हैं।

मूल शब्द : बाल साहित्य, बाल कहानी, परी कहानियाँ

बाल साहित्य : बच्चों के लिए लिखा गया साहित्य बाल साहित्य है। जो बाल मनोभावनाओं और मानोवृत्तियों के अनुकूल होता है, वही बाल साहित्य के श्रेणी में लिया जाता है। बाल साहित्य डॉ. सुरेन्द्र विक्रम तथा जवाहर 'इन्दु'

के अनुसार- ‘‘बाल मनोविज्ञान बाल साहित्य लेखन की एक कसौटी है। बाल मानोविज्ञान के अध्ययन किए बिना कोई भी रचनाकार स्वस्थ एवं सार्थक बाल साहित्य का सृजन नहीं कर सकता है। यह बिल्कुल निर्विवाद सत्य है कि बच्चों के लिए लिखना सबके वश की बात नहीं है। बच्चों का साहित्य लेखने के लिए रचनाकार को स्वयं बच्चा बन जाना पड़ता है। यह स्थिति तो बिल्कुल परकाय प्रवेश वाली है।’’ अर्थात् बाल प्रवृत्तियों को जान कर उनके मनोपरावृत्तियों और मानोविज्ञान के अनुरूप लिखा गया साहित्य बाल साहित्य है।

बच्चों की दुनिया बहुत अपूर्व होता है। वे अपने आस-पास के परिवेश में जो भी वस्तु या घटना को देखते हैं, उसे जानने के लिए जिज्ञासू होते हैं। अतएव बच्चों के रुचि के अनुकूल मनोरंजक और ज्ञानवर्धक बाल साहित्य की ओर वे आकर्षित होते हैं साथ ही उसे बड़ी छाव से पढ़ते हैं। बाल साहित्य के स्वरूप पर भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

बाल साहित्य पर भारतीय विद्वानों की दृष्टिः-

बच्चों के व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रख कर उन्हे सही दिशा प्रदान करने के लिए पंचतंत्र, हितोपदेश, कथा सरितसगार और सिंहासन बत्तीसी जैसी बालोपायोगी कृतियाँ प्राचीनकाल में भारतीय साहित्यकारों ने लिखा है। यह साहित्य बच्चोंक के व्यक्तित्व निर्माण और विकास का रूप रेखा बना होगा।

प्रसिद्ध भारतीय बाल साहित्यकार सोहनलाल द्विवेदी : बाल साहित्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा है- ‘‘सफल बाल साहित्य वही है जिसे बच्चे सरलता से अपना सकें और भाव ऐसे हों, जो बच्चों के मन को भाएं। यों तो अनेक सहित्यकार बालकों के लिए लिखते रहते हैं, किन्तु सचमुच जो बालकों के मन की बात, बालकों की भाषा में लिख दे, वही सफल बाल साहित्य लेखक है।’’

पाश्चात्य साहित्यकार लिलीयन स्मिथ : ‘‘यह अवश्य नहीं है कि बच्चों के लिए लिखी गई सभी पुस्तकें साहित्य ही हों और न यह ही आवश्यक है कि बड़े लोग जिसे बाल साहित्य मानते हैं, बालरुचि के अनुकूल चुनी गई पुस्तक उस कसौटी पर खरी उतर जाए। ऐसे भी लोग हैं जो बड़ों का सूक्ष्म संस्करण सिद्ध करता है और वास्तव में यह गलत धारणा बचपन द्वारा उत्पन्न हुई है। बच्चे वास्तव में ऐसे जाति होते हैं जिनका जीवन

अनुभव बड़ों से बिल्कुल भिन्न होता है। उनकी एक अलग दुनिया होती है, जिस में जीवन के मूल्य बाल सुलभ मानोवृत्ति के आधार पर निर्धारित होते हैं- बड़ों के अनुभव के आधार नहीं।"

बाल साहित्य विकास : प्राचीन समय से ही मौखिक रूप में साहित्य विद्यमान रहा है। हिन्दी साहित्य का इतिहास शुरू होने के पहले से ही बाल साहित्य उपलब्ध है। हिन्दी से पहले संस्कृत में बाल साहित्य लिखा गया है। इससे यह विदित है संस्कृत साहित्य के समय से ही बच्चों के व्यक्तित्व विकास की चिंता किया गया है। संस्कृत साहित्य की प्रेरणा से हिन्दी बाल साहित्य लेखन अपनी मार्गदर्शन पाया है। भारतेन्दु युग में बाल कहानियों की आरंभ हुआ है। शरुआत में संस्कृत और अन्य भाषाओं में उपलब्ध बालसाहित्य को अनुदित किया गया है। द्विवेदी जी की प्रेरणा से बाल साहित्य की विकास में गणनीय वृद्धि हुआ है। बाल साहित्य रचना की महत्व पहचाना गया है। स्वतंत्र्योंत्तर समय बाल साहित्य की गौरव युग कह सकते हैं। बाल साहित्यकारों की निरंतर प्रयास से बाल अनुकूल साहित्य लिखा गया है। बाल रुचि, बाल मानोविज्ञान, विभिन्न परिवेश, बच्चों की समस्या आदि विषयों को दृष्टि में रख कर बाल साहित्य लिखा गया है। जिससे बच्चों की जिज्ञासा तृप्त होता है; बच्चों को मनोरंजन मिलता है; बच्चों की ज्ञान विकास होता है; बच्चों को विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करता है। ज्ञान, धर्म, स्वास्थ्य, स्वच्छता, प्रकृति, संस्कृति और अन्य कई क्षेत्रों के बारे में बाल साहित्य द्वारा जान बच्चों को आनंद दायक पद्दती में बता है। बाल साहित्य कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि विभिन्न प्रकारों में लिखा गया है।

बाल कहानी : सदियों से बच्चे माँ, दादी, नानी आदि से हम कहानियाँ सुनते आ रहे हैं। यह मौखिक विधा साहित्य से भी पुरनी है। माँ, दादी, नानी अपनी कहानियों को माध्यम बना कर विश्व के रहस्यों के बारे में बालकों को बताया गया है। राजा-रानी, भूत-प्रेत, जादूगर, परी आदि के रहस्यों से भरी कहानियाँ कहने और सुनने की परंपरा रही है। आधुनिक काल में कहानी साहित्य चहुमुखी विकास पाया है। बाल सहित्यकार अपने कहानियों में समयानुकूल परिवेश, कल्पान, विज्ञान, फांतासी आदि नए दृष्टिकोणों में अपनी विचार प्रस्तुत किए है। जिस से उन्हे मूलतः मनोरंजन के साथ ज्ञान और सीख मिलती है। डॉ. शेषपाल सिंह शेष, हरिकृष्ण देवसरे और श्रीप्रसाद कहानियों को विभिन्न प्रकारों में बाँटे हैं।

प्रौढ़ कहानी लेखकों के कहानियों में कुछ बालोपायोगी कहांनियाँ मिलते हैं। जैसे राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द के ‘राजाभोज का सपना’, ‘बच्चों का इनाम’ और ‘लड़कों की कहानी’, मुंशी प्रेमचंद के ‘ईदगाह’, ‘बड़े भाई सब’ आदि। स्वातंत्र्योंत्तर काल में बाल कहानी के क्षेत्र में भूपनरायण दीक्षित, वासुदेवशरण अग्रवाल, शिवमूर्ति सिंह वत्स, बालकृष्ण एम.ए., मनमोहन सरल, राजेन्द्र शर्मा, मनमोहन मदारिया, सावित्री वर्मा, हरिकृष्ण देवसरे, रामचन्द्र तिवारी, नरेंद्र धीर तथा रमेश चंद्र आदि सराहनिय बाल कहानियाँ लिखे हैं।

वर्तमान काल में बाल साहित्यकार बहुतेरों ने बाल कहानी में अपनी लेखनी चला रहे है। डॉ. सूचित सेठ के अनुसार सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, श्यामलकांत वर्मा, राष्ट्रबंधु, राजनरायां चौधरी, चक्रधर नलिन, शकुंतला कालरा, उषा यादव, रोहिताश्व अस्थाना, जाकिर अली रजनीश, कामना सिंह, प्रकाश मनु, क्षमा शर्मा, मनोहर वर्मा, डॉ श्रीप्रसाद, आदि अनेक वरिष्ठ एवं नवोदित बाल साहित्यकार सराहनिय कार्य इस क्षेत्र में किए हैं।

परी कहानियाँः

‘परी’ एक फारसी और हिन्दी मूल का भारतीय शब्द है। जिसका अर्थ ‘परी’ या ‘देवदूत’। अंग्रेज में इन्हे ‘फैयरी’ कहा जाता है। इस का प्रयोग प्रथम मैडम डी. ऑलनोय नामक फ्रांसीसी लेखिका 1600 दशक में ‘‘फेयरी टेल’’ के रूप में प्रयोग किया है।

‘परी’ यह सम्पूर्ण रूप से एक काल्पनिक चरित्र है। सुंदर स्त्रियाँ लाल या सफेद रंग के कपड़े पहने हुए आलोकिक और राहस्यमय शक्तियों की स्वामिनी के रूप में चित्रित किया गया है। जिनका पंख होते है; धरती से विशेष लगाव और बच्चों से विशेष लगाव होता है। वे बच्चों को मनोरंजन और कठिन समय में सहायता करती है। हिन्दी बाल साहित्य में परियों की इस रूप को कल्पना करके इन पर बहुसंख्या में कविता, कहानी, और नाटकों की सृजन बाल साहित्य में किया गया है।

भारत के साथ-साथ विश्वभर में परियों की कहानियाँ मिलती हैं, किन्तु उन कहानियों में परियों की जो कल्पना किया गया है वह पूरी तरह भिन्न है। स्त्रियों के साथ-साथ छोटे लड़कों जैसे पुरुष, देव-दानव, राक्षस, जादूगर-जदूगरनी आदि को भी परी माना गया है।

परी कहानियों का विकास : यह अतिशय की बात नहीं है कि विश्वसाहित्य को भारतीय संस्कृत साहित्य ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। 'पंचतंत्र' संस्कृत की अमर ग्रंथ इस कथन का सबल प्रमाण है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में परीकथाएँ, जंतुकथाएँ और उपदेशात्मक कथाएँ प्रचलित रहा है। पंचतंत्र की कहानियों सुनकर प्रभावित हुए ईरान के विद्याप्रेमी राजा खुसरो नौशेरवाँ ने उनके हकीम बरजूया को भारत भेज कर पंचतंत्र की प्राप्त की। उन्होंने हकीम की सलाह पर इसे पहलवी में अनुवाद किये हैं। परंतु पंचतंत्र का विश्व विजयी होने का मूल कारण ईसप की जन्तु कथाएँ भी है। ईसप की नीति कथाएँ पंचतंत्र से मिलती-जुलती हैं। लाफोन्तेन 17वीं शताब्दी में जीव जंतुओं की कहानियों के लिए पंचतंत्र या ईसप की कहानियों को आधार बना कर लयात्मक, भावपूर्ण सरल भाषा का प्रयोग करते हुए गीत-कथाओं की रचना की है। इसी समय के प्रसिद्ध विश्व साहित्यकार हैं- डेनियल डेफो ('रॉबिन्सन क्रूसो' की रचना की) और जोनाथन स्विफ्ट ('गुलिवर की कथाएँ' की रचना की)। अरब की साहसिक कहानियाँ 'सिंदबाद', 'अलादीन का चिराग', आदि उस समय अरब के जीवन, समाज तथा संस्कृति की जानकारी देती है। 19 वीं शताब्दी के आरंभ में जर्मन के भाषा विज्ञानी ग्रीम बंधुों ने भाषा अध्ययन के दौरान बड़ी संख्या में परीकथाओं की संग्रह किए है। इन कहानियों के माध्यम से अद्‌भुत परीलोक की कल्पना किया गया। जिन्हे पढ़ कर बच्चे खूब आनंद अनुभव किये है। एंडरसन की यथार्थ को कल्पना का आधार बना कर लिखी गई कहानियाँ तेजी से लोकप्रिय हुए है। एंडरसन ने छोटे-छोटे वस्तुओं को जीवन देकर अपनी कहानियों में सजीव पात्र बनाया है जो बच्चों को अपने परिवेश से जोड़ती हैं। लेवीस कैरोल (चार्ल्स डग्सन) का एलिस इन वन्डरलैन्ड बच्चों की कल्पनाशीलता को विकास करती है। रूस में मैक्सिम गोर्की ने बाल साहित्य की रचना की जो बच्चों को खूब भाया हैं। इस प्रकार परी कथाओं ने अपनी रोचकता के कारण सदियों तक हस्थांतरित होते हुए अपनी अस्तित्व को बनाये रखने में सफल हुए हैं। थायलैंड, फ्रांस, डेनमार्क, इटली, जर्मन और बर्मा आदि देशों में भी परिकथाएँ पाई जाति है।

परियों की उत्पत्ति पर एडवर्ड लीच अपने किताब 'स्टैन्डर्ड डिक्शनेरी ऑफ फॉकलोर' में बताया की - ''परियों की उत्पत्ति के संबंध में भी कई सिद्धांत हैं। एक तो यह है कि परियाँ वे देवता अथवा महापुरुष हैं, जिनका महत्व काम हो गया और वे पुराने देवताओं के रूप में नई राहों दिखते हैं। दूसरा सिद्धांत यह है कि परियाँ प्रकृति की आदि शक्तियों का

मानवीकरण हैं। तीसरा यह कि वे मृतकों की आत्माएँ होती हैं जो भूमि के अंदर सोती हैं।" यह सिद्धांत पाश्चात्य परी कथाओं के लिए लागू होती है। किन्तु भारतीय परियाँ इस से भिन्न आधार पर खड़ी है। मनुष्य मृत्यु और आत्मा । इसी से आत्मा, भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि की उत्पत्ति हुई। ये मानव के लिए अहित करते है। इससी समय में परी मानव का हितकार के रूप में प्रचलन में आए हैं।

रोचक और कौतूहल, बच्चों के समस्या के कारण और उनके समाधान, अलौकिक शक्तियों की रहस्य गाथाएँ, मानव का हित और अहित की चमत्कार आदि से युक्त परीकथाएँ लिखा गया है। ये कहानियाँ अपना कहानी के क्षेत्र में अपना विशाल अस्थित्व पाया है। समय-समय पर इन कहानियों में परिस्थितियों के अनुसार परवर्तन किया गया है और कुछ नई कहानियाँ भी प्रकाश में आए है। समय के साथ सोच और विचार में जो बदलाव आया जिस से मानव प्रकृति पर नियंत्रण पाया है। परीकथाएँ अपनी अस्थित्व बनी रखी है। यथा परीकहानियाँ बच्चों के लिए जादुई घटना और काल्पनिक प्राणियों से जुड़ी कहानी है। जिसके द्वारा उन्हे मनोरंज, मूल्य की सिक्षा, नीति आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त कराते हैं।

डॉ. सुरेन्द्र विक्रम जी की मत है कि 'बदलते हुए समय में परीकथाएं उतनी प्रासंगिक भले ही नहीं रह गई हैं, परंतु उनको अगर नई सोच, नयी संवेदना और कल्पना का पुट डालकर प्रस्तुत किया जाए तो बच्चों को अच्छी मानसिक खुराक मिल सकती है। अगर बच्चों को अच्छी खुराक साहित्य प्रदान करता है तो स्वाभाविक है कि उसकी गणना बाल साहित्य में की जानी चाहिए।'

मूल ग्रंथः

1. हिन्दी बाल साहित्य का अनुशीलन, डॉ आनंद बक्षी
2. हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, डॉ. परशुराम शुक्ल
3. बाल साहित्य मेरा चिंतन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे
4. स्टूडेंट और शिष्टाचार, गौतम मसानिया

वेब सूची :

5. https://uou.ac.in@sites/default/files/slm@FHVA&(A)10 .pdf
6. https:// www.storyboardthat.com@genres/fairy&tales